

# रोमियों

**1** पौलुस जो यीशु मसीह का दास है, जिसे परमेश्वर ने प्रेरित होने के लिए बुलाया, जिसे परमेश्वर के उस सुसमाचार के प्रचार के लिए चुना गया

2जिसकी पहले ही नबियों द्वारा पवित्र शास्त्रों में घोषणा कर दी गयी जिसका सम्बन्ध पुत्र से है, जो शरीर से दाऊद का वंशज है 4किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा मरे हुएों में से जिलाए जाने के कारण जिसे सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र दर्शाया गया है, यही यीशु मसीह हमारा प्रभु है। 5इसी के द्वारा मुझे अनुग्रह और प्रेरिताई मिली, ताकि सभी गैर यहूदियों में, उसके नाम में, वह आस्था जो विश्वास से जन्म लेती है, पैदा की जा सके। 6उनमें परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह का होने के लिये तुम लोग भी बुलाये गये हो।

7वह मैं, तुम सब के लिए, जो रोम में हो और परमेश्वर के प्यारे हो, जो परमेश्वर के पवित्र जन होने के लिए बुलाये गये हो, यह पत्र लिख रहा हूँ। हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें उसका अनुग्रह और शांति मिले।

## धन्यवाद की प्रार्थना

8सबसे पहले मैं यीशु मसीह के द्वारा तुम सब के लिये अपने परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ। क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा संसार में सब कहीं हो रही है। 9प्रभु, जिसकी सेवा उसके पुत्र के सुसमाचार का उपदेश देते हुए मैं अपने हृदय से करता हूँ, प्रभु मेरा साक्षी है, कि मैं तुम्हें लगातार याद करता रहता हूँ। 10अपनी प्रार्थनाओं में मैं सदा ही विनती करता रहता हूँ कि परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा किसी तरह पूरी हो। 11मैं बहुत इच्छा रखता हूँ क्योंकि मैं तुमसे मिल कर कुछ आत्मिक उपहार देना चाहता हूँ, जिससे तुम शक्तिशाली बन सको। 12या मुझे कहना चाहिये कि मैं जब तुम्हारे बीच होऊँ, तब एक दूसरे के विश्वास से हम परस्पर प्रोत्साहित हों। 13भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें पता हो कि मैंने तुम्हारे पास आना बार-बार चाहा है ताकि जैसा फल मैंने गैर यहूदियों में पाया है, वैसा ही तुमसे भी पा सकूँ, किन्तु अब तक बाधा आती ही रही। 14मुझ पर यूनानियों और गैर यूनानियों, बुद्धिमानों और मूर्खों सभी का कर्ज है।

15इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को भी सुसमाचार का उपदेश देने को तैयार हूँ।

16मैं सुसमाचार के लिए शर्मिंदा नहीं हूँ क्योंकि उसमें पहले यहूदी और फिर गैर यहूदी-जो भी उसमें विश्वास रखता है-उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है। 17क्योंकि सुसमाचार में यह दर्शाया गया है, परमेश्वर मनुष्य को अपने प्रति सही कैसे बनाता है। यह आदि से अंत तक विश्वास पर टिका है जैसा कि शास्त्र में लिखा है, “धर्मा मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।”

## सबने पाप किया है

18उन लोगों के-जो सत्य को अधर्म से दबाते हैं, बुरे कर्मों और हर बुराई पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रकट होगा। 19और ऐसा हो रहा है क्योंकि परमेश्वर के बारे में वे पूरी तरह जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने इसे उन्हें जनाया है। 20जब से संसार की रचना हुई उसकी अदृश्य विशेषताएँ अनन्त शक्ति और परमेश्वरत्व साफ-साफ दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे पूरी तरह जानी जा सकती हैं, जो परमेश्वर ने रचीं। इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं। 21यद्यपि वे परमेश्वर को जानते हैं किन्तु वे उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान या धन्यवाद नहीं देते। बल्कि वे अपने विचारों में निरर्थक हो गये। और उनके जड़ मन अन्धरे से भर गये। 22वे बुद्धिमान होने का दावा करके मूर्ख ही रह गये। 23और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्यों, चिड़ियाओं, पशुओं और साँपों से मिलती जुलती मूर्तियों में उन्होंने ढाल दिया।

24इसीलिये परमेश्वर ने उन्हें मन की बुरी इच्छाओं के हाथों सौंप दिया। वे दुराचार में पड़ कर एक दूसरे के शरीरों का अनादर करने लगे। 25उन्होंने झूठ के साथ परमेश्वर के सत्य का सौदा किया और वे सृष्टि के बनाने वाले को छोड़ कर उसकी बनायी सृष्टि की उपासना सेवा करने लगे। परमेश्वर धन्य है। आमीन।

26इसलिए परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ वासनाओं के हाथों सौंप दिया। उनकी स्त्रियाँ स्वाभाविक यौन सम्बन्धों की बजाय अस्वाभाविक यौन सम्बन्ध रखने लगीं। 27इसी तरह पुरुषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संभोग छोड़

दिया और वे आपस में ही वासना में जलने लगे। और पुरुष परस्पर एक दूसरे के साथ बुरे कर्म करने लगे। उन्हें अपने भ्रष्टाचार का यथोचित फल भी मिलने लगा।

28 और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानने से मना कर दिया सो परमेश्वर ने उन्हें कुबुद्धि के हाथों सौंप दिया। और ये ऐसे अनुचित काम करने लगे जो नहीं करने चाहिये थे। 29 वे हर तरह के अधर्म, पाप, लालच और वैर से भर गये। वे डाह, हत्या, लड़ाई-झगड़े, छल-छद्म और दुर्भावना से भरे हैं। वे दूसरों का सदा अहित सोचते हैं। वे कहानियाँ गड़ते रहते हैं। 30 वे परनिन्दक हैं, और परमेश्वर से घृणा करते हैं। वे उद्वण्ड हैं, अहंकारी हैं, बड़बोला हैं, बुराई के जन्मदाता हैं और माता-पिता की आज्ञा नहीं मानते। 31 वे मूढ़, वचन-भंग करने वाले, प्रेम-रहित और निर्दय हैं। 32 चाहे वे परमेश्वर की धर्म-पूर्ण विधि को जानते हैं जो बताती है कि जो ऐसी बातें करते हैं, वे मौत के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल उन कामों को करते हैं, बल्कि वैसा करने वालों का समर्थन भी करते हैं।

### तुम लोग भी पापी हो

2 सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है, तेरे पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि जिस बात के लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन कर्मों का न्याय करता है उन्हें आप भी करता है। 2 अब हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं उन्हें परमेश्वर का उचित दण्ड मिलता है। 3 किन्तु हे मेरे मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों को अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम करता है तो क्या तू सोचता है कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जायेगा। 4 या तू उसके महान अनुग्रह, सहनशक्ति और धैर्य को हीन समझता है? और इस बात की उपेक्षा करता है कि उसकी करुणा तुझे प्रायश्चित्त की तरफ ले जाती है। 5 किन्तु अपनी कठोरता और कभी पछतावा नहीं करने वाले मन के कारण उसके क्रोध को अपने लिए उस दिन के वास्ते इकट्ठा कर रहा है जब परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा। 6 परमेश्वर हर किसी को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। 7 जो लगातार अच्छे काम करते हुए महिमा, आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह बदले में अनन्त जीवन देगा। 8 किन्तु जो अपने स्वार्थीपन से सत्य पर नहीं चल कर अधर्म पर चलते हैं उन्हें बदले में क्रोध और प्रकोप मिलेगा। 9 हर उस मनुष्य पर दुःख और संकट आएगा जो बुराई पर चलता है। पहले यहूदी पर और फिर गैर यहूदी पर। 10 और जो कोई अच्छाई पर चलता है उसे महिमा, आदर और शांति मिलेगी। पहले

यहूदी को और फिर गैर यहूदी को 11 क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।

12 जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना पाप किये, वे व्यवस्था से बाहर रहते हुए नष्ट होंगे। और जिन्होंने व्यवस्था में रहते हुए पाप किया उन्हें व्यवस्था के अनुसार ही दण्ड मिलेगा। 13 क्योंकि वे जो केवल व्यवस्था की कथा सुनते हैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं हैं। बल्कि जो व्यवस्था पर चलते हैं वे ही धर्मी ठहराये जायेंगे। 14 सो जब गैर यहूदी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से ही व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो चाहे उनके पास व्यवस्था नहीं है तो भी वे अपनी व्यवस्था आप हैं। 15 वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसकी ही साक्षी देता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या निर्दोष कहता है। 16 वे बातें उस दिन होंगी जब परमेश्वर मनुष्य की छुपी बातों का, जिसका मैं उपदेश देता हूँ उस सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा न्याय करेगा।

### यहूदी और व्यवस्था

17 किन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और व्यवस्था में तेरा विश्वास है और अपने परमेश्वर का तुझे अभिमान है 18 और तू उसकी इच्छा को जानता है और उत्तम बातों को ग्रहण करता है, क्योंकि व्यवस्था से तुझे सिखाया गया है, 19 तू यह मानता है कि तू अंधों का अगुआ है, जो अंधेरे में भटक रहे हैं उनके लिए तू प्रकाश है, 20 अबोध लोगों को सिखाने वाला है, बच्चों का उपदेशक है क्योंकि व्यवस्था में तुझे साक्षात् ज्ञान और सत्य ठोस रूप में प्राप्त हैं 21 तो तू जो औरों को सिखाता है, अपने को क्यों नहीं सिखाता। तू जो चोरी नहीं करने का उपदेश देता है, स्वयं चोरी क्यों करता है? 22 तू जो कहता है व्यभिचार नहीं करना चाहिये, स्वयं व्यभिचार क्यों करता है? तू जो मूर्तियों से घृणा करता है मंदिरों का धन क्यों छीनता है? 23 तू जो व्यवस्था का अभिमानी है, व्यवस्था को तोड़ कर परमेश्वर का निरादर क्यों करता है? 24 "तुम्हारे कारण ही गैर यहूदियों में परमेश्वर के नाम का अपमान होता है।" जैसा कि शास्त्र में लिखा है।

25 यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो तभी ख़तने का महत्त्व है पर यदि तुम व्यवस्था को तोड़ते हो तो तुम्हारा ख़तना रहित होने के समान ठहरा। 26 यदि किसी का ख़तना नहीं हुआ है और वह व्यवस्था के पवित्र नियमों पर चलता है तो क्या उसके ख़तना रहित होने को भी ख़तना न गिना जाये? 27 वह मनुष्य जिसका शरीर से ख़तना नहीं हुआ है और जो व्यवस्था का पालन करता है, तुझे अपराधी ठहरायेगा। जिसके पास लिखित व्यवस्था का विधान है, और जिसका ख़तना भी हुआ है, और जो व्यवस्था को तोड़ता है,

28जो बाहर से ही यहूदी है, वह वास्तव में यहूदी नहीं है। शरीर का ख़तना वास्तव में ख़तना नहीं है। 29सच्चा यहूदी वही है जो भीतर से यहूदी है। सच्चा ख़तना आत्मा द्वारा मन का ख़तना है, न कि लिखित व्यवस्था का। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर से की जाती है।

**3**सो यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तने का क्या मूल्य? 2हर प्रकार से बहुत कुछ। क्योंकि सबसे पहले परमेश्वर का उपदेश तो उन्हें ही सौंपा गया। 3यदि उनमें से कुछ विश्वासघाती हो भी गये तो क्या है? क्या उनका विश्वासघातीपन परमेश्वर की विश्वासपूर्णता को बेकार कर देगा? 4निश्चय ही नहीं, यदि हर कोई झूठा भी है तो भी परमेश्वर सच्चा ठहरेगा। जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

“ताकि जब तू कहे तू उचित सिद्ध हो और जब तेरा न्याय हो, तू विजय पाये।” *भजन संहिता 51:4*

5सो यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता सिद्ध करे तो हम क्या कहें? क्या यह कि वह अपना कोप हम पर प्रकट करके अन्याय नहीं करता? (मैं एक मनुष्य के रूप में अपनी बात कह रहा हूँ।) 6निश्चय ही नहीं, नहीं तो वह जगत का न्याय कैसे करेगा।

7किन्तु तुम कह सकते हो: “जब मेरी मिथ्यापूर्णता से परमेश्वर की सत्यपूर्णता और अधिक उजागर होती है तो इससे उसकी महिमा ही होती है, फिर भी मैं दोषी करार क्यों दिया जाता हूँ?” 8और फिर क्यों न कहें: “आओ! बुरे काम करें ताकि भलाई प्रकट हो।” जैसा कि हमारे बारे में निन्दा करते हुए कुछ लोग हम पर आरोप लगाते हैं कि हम ऐसा कहते हैं। ऐसे लोग दोषी करार दिये जाने योग्य हैं। वे सभी दोषी हैं

### कोई भी धर्मी नहीं

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम यहूदी ग़ैर यहूदियों से किसी भी तरह अच्छे हैं, नहीं बिल्कुल नहीं। क्योंकि हम यह दर्शा चुके हैं कि चाहे यहूदी हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सभी पाप के वश में हैं। 10शास्त्र कहता है:

“कोई भी धर्मी नहीं, एक भी! 11कोई समझदार नहीं, एक भी! कोई ऐसा नहीं, जो प्रभु को खोजता।

12सब के सब भटके हैं एक से खोटे हुए, साथ-साथ सब के सब, कोई भी यहाँ पर दया तो दिखाता नहीं, एक भी नहीं।” *भजन संहिता 14:1-3*

13“उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं वे अपनी जबान से छल करते हैं।” *भजन संहिता 5:9*

“उनके होंठों पर नाग विष रहता है”

*भजन संहिता 140:3*

14“शाप से-कटुता से मुँह भरे रहते हैं।”

*भजन संहिता 10:7*

15“हत्या करने को वे हरदम उतावले रहते हैं।

16वे जहाँ कहीं जाते नाश ही करते हैं, संताप देते हैं।

17उनको शांति का मार्ग पता नहीं।”

*यशायाह 59:7-8*

18“उनकी आँखों में प्रभु का भय नहीं है।”

*भजन संहिता 36:1*

19अब हम यह जानते हैं कि व्यवस्था में जो कुछ कहा गया है, वह उन को सम्बोधित है जो व्यवस्था के अधीन हैं। ताकि हर मुँह को बन्द किया जा सके और सारा जगत परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। 20व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ मिलता है, वह है पाप की पहचान करना।

### परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

21किन्तु अब वास्तव में मनुष्य के लिए यह दर्शाया गया है कि परमेश्वर व्यवस्था के बिना ही उसे अपने प्रति सही कैसे बनाता है। निश्चय ही व्यवस्था और नबियों ने इसकी साक्षी दी है। 22सभी विश्वासियों के लिये यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट की गयी है बिना किसी भेदभाव के। 23क्योंकि सभी ने पाप किये हैं और सभी परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। 24किन्तु यीशु मसीह में संपन्न किए गए अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा उसके अनुग्रह से वे एक सेंटमेत के उपहार के रूप में धर्मी ठहराये गये हैं। 25परमेश्वर ने यीशु मसीह को, उसमें विश्वास के द्वारा पापों से छुटकारा दिलाने के लिये, लोगों को दिया। उसने यह काम यीशु मसीह के बलिदान के रूप में किया। ऐसा यह प्रमाणित करने के लिए किया गया कि परमेश्वर सहनशील है क्योंकि उसने पहले उन्हें उनके पापों का दंड दिये बिना छोड़ दिया था 26आज भी अपना न्याय दर्शाने के लिए कि वह न्यायपूर्ण है और न्यायकर्ता भी है; उनका जो यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं।

27तो घमण्ड करना कहाँ रहा? वह तो समाप्त हो गया। भला कैसे? क्या उस विधि से जिसमें व्यवस्था जिन कर्मों की अपेक्षा करती है, उन्हें किया जाता है? नहीं, बल्कि उस विधि से जिसमें विश्वास समाया है।

28कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चल कर नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा ही धर्मी बन सकता है।

29या परमेश्वर क्या केवल यहूदियों का है? क्या वह ग़ैर यहूदियों का नहीं है? हाँ वह ग़ैर यहूदियों का भी है।

30क्योंकि परमेश्वर एक है। वही उनको जिनका उनके

विश्वास के आधार पर ख़तना हुआ है, और उनको जिनका ख़तना नहीं हुआ है उसी विश्वास के द्वारा, धर्मी ठहरायेगा। 3। सो क्या हम विश्वास के आधार पर व्यवस्था को व्यर्थ ठहरा रहे हैं? निश्चय ही नहीं। बल्कि हम तो व्यवस्था को और अधिक शक्तिशाली बना रहे हैं।

### इब्राहीम का उदाहरण

**4** तो फिर हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को इसमें क्या मिला? 2 क्योंकि यदि इब्राहीम को उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया जाता है तो उसके गर्व करने की बात थी। किन्तु परमेश्वर के सामने वह वास्तव में गर्व नहीं कर सकता। 3 पवित्र शास्त्र क्या कहता है? “इब्राहीम ने परमेश्वर में विश्वास किया और वह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया” \*

4 काम करने वाले को मज़दूरी देना कोई दान नहीं है, वह तो उसका अधिकार है। 5 किन्तु यदि कोई व्यक्ति काम करने की बजाय उस परमेश्वर में विश्वास करता है, जो पापी को भी छोड़ देता है; तो उसका विश्वास ही उसके धार्मिकता का कारण बन जाता है। 6 ऐसे ही दाऊद भी उसे धन्य मानता है जिसे कामों के आधार के बिना ही परमेश्वर धर्मी मानता है। वह जब कहता है:

7 “धन्य हैं वे जिनके व्यवस्था रहित कामों को क्षमा मिली और जिनके पापों को ढक दिया गया।

8 धन्य है वह पुरुष जिसके पापों को परमेश्वर ने गिना नहीं है।”

भजन संहिता 32:1-2

9 तब क्या यह धन्यपन केवल उन्हीं के लिये हैं जिनका ख़तना हुआ है, या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ। (हाँ, यह उन पर भी लागू होता है जिनका ख़तना नहीं हुआ) क्योंकि हमने कहा है इब्राहीम का विश्वास ही उसके लिये धार्मिकता गिना गया। 10 तो यह कब गिना गया? जब उसका ख़तना हो चुका था या जब वह बिना ख़तने का था। नहीं ख़तना होने के बाद नहीं बल्कि ख़तना होने की स्थिति से पहले। 11 और फिर एक चिह्न के रूप में उसने ख़तना ग्रहण किया। जो उस विश्वास के परिणामस्वरूप धार्मिकता की एक छाप थी जो उसने उस समय दर्शाया था जब उसका ख़तना नहीं हुआ था। इसीलिए वह उन सभी का पिता है जो यद्यपि बिना ख़तने के हैं किन्तु विश्वासी हैं। (इसलिए वे भी धर्मी गिने जाएँगे) 12 और वह उनका भी पिता है जिनका ख़तना हुआ है किन्तु जो हमारे पूर्वज इब्राहीम के विश्वास का जिसे उसने ख़तना होने से पहले प्रकट किया था, अनुसरण करते हैं।

“इब्राहीम ... गया” उत्पत्ति 15:6

### विश्वास और परमेश्वर का वचन

13 इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे संसार के उत्तराधिकारी होंगे, व्यवस्था से नहीं मिला था बल्कि उस धार्मिकता से मिला था जो विश्वास के द्वारा उत्पन्न होती है। 14 यदि जो व्यवस्था को मानते हैं, वे जगत के उत्तराधिकारी हैं तो विश्वास का कोई अर्थ नहीं रहता और वचन भी बेकार हो जाता है। 15 लोगों द्वारा व्यवस्था का पालन नहीं किये जाने से परमेश्वर का क्रोध उपजता है किन्तु जहाँ व्यवस्था ही नहीं है वहाँ व्यवस्था का तोड़ना ही क्या?

16 इसीलिए सिद्ध है कि परमेश्वर का वचन विश्वास का फल है और यह संतमेत में ही मिलता है। इस प्रकार उसका वचन इब्राहीम के सभी वंशजों के लिए सुनिश्चित है; न केवल उनके लिये जो व्यवस्था को मानते हैं बल्कि उन सब के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वास रखते हैं। वह हम सब का पिता है। 17 शास्त्र बताता है, “मैंने तुझे (इब्राहीम) अनेक राष्ट्रों का पिता बनाया।” \* उस परमेश्वर की दृष्टि में वह इब्राहीम हमारा पिता है जिस पर उसका विश्वास है। परमेश्वर जो मरे हुए को जीवन देता है और जो नहीं है, उसे अस्तित्व देता है। 18 सभी मानवीय आशाओं के विरुद्ध अपने मन में आशा सँजोये हुए इब्राहीम ने उसमें विश्वास किया, इसीलिए वह कहे गये के अनुसार अनेक राष्ट्रों का पिता बना। “तेरे अनगिनत वंशज होंगे।” \* 19 अपने विश्वास को बिना डगमगाये और यह जानते हुए भी कि उसकी देह सौ साल की बूढ़ी मरियल हो चुकी है और सारा बाँझ है, 20 परमेश्वर के वचन में विश्वास बनाये रखा। इतना ही नहीं, विश्वास को और मज़बूत करते हुए परमेश्वर को महिमा दी। 21 उसे पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने उसे जो वचन दिया है, उसे पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है। 22 इसलिये, “यह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।” \*

23 शास्त्र का यह वचन कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया, न केवल उसके लिये है, 24 बल्कि हमारे लिये भी है परमेश्वर हमें, जो उसमें विश्वास रखते हैं, धार्मिकता स्वीकार करेगा। उसने हमारे प्रभु यीशु को फिर से जीवित किया। 25 यीशु जिसे हमारे पापों के लिए मारे जाने को सौंपा गया और हमें धर्मी बनाने के लिए, मरे हुए में से पुनः जीवित किया गया।

### परमेश्वर का प्रेम

**5** क्योंकि हम अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के लिए धर्मी हो गये हैं, सो अपने प्रभु यीशु मसीह

“शास्त्र बताता ... बनाया” उत्पत्ति 17:5

“तेरे ... होंगे” उत्पत्ति 15:5

“यह विश्वास ... गया ” उत्पत्ति 15:6

के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है। 2 उसी के द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी स्थिति है, उस तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की आशा का आनन्द लेते हैं। 3 इतना ही नहीं, हम अपनी विपत्तियों में भी आनन्द लेते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि विपत्ति धीरज को जन्म देती है। 4 और धीरज से परखा हुआ चरित्र निकलता है। परखा हुआ चरित्र आशा को जन्म देता है। 5 और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।

6 क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय पर हम भक्तिहीनों के लिए मसीह ने अपना बलिदान दिया। 7 अब देखो, किसी धर्मी मनुष्य के लिए भी कोई कठिनाई से मरता है। किसी अच्छे आदमी के लिए अपने प्राण त्यागने का साहस तो कोई कर भी सकता है। 8 पर परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब कि हम तो पापी ही थे; किन्तु यीशु ने हमारे लिए प्राण त्यागे।

9 क्योंकि अब जब हम उसके लह के कारण धर्मी हो गये हैं तो अब उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से अवश्य ही बचाये जायेंगे। 10 क्योंकि जब हम उसके बैरी थे तो उसने अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप कराया तो चूँकि अब हमारा मेलमिलाप हो चुका है तो उसके जीवन से हमारी अधिक से अधिक रक्षा होगी। 11 इतना ही नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर अब उसमें आनन्द लेते हैं।

### आदम और यीशु

12 इसीलिये एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती पर पाप आया और पाप से मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे। 13 अब देखो व्यवस्था के आने से पहले जगत में पाप था किन्तु जब तक कोई व्यवस्था नहीं होती किसी का भी पाप नहीं गिना जाता। 14 किन्तु आदम से लेकर मूसा के समय तक मौत सब पर राज करती रही। मौत उन पर भी वैसे ही हावी रही जिन्होंने पाप नहीं किये थे जैसे आदम पर। आदम भी वैसा ही था जैसा वह जो (मसीह) आने वाला था। 15 किन्तु परमेश्वर का वरदान आदम के अपराध के जैसा नहीं था क्योंकि यदि उस एक व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों की मृत्यु हुई तो उस एक व्यक्ति यीशु मसीह की करुणा के कारण मिले परमेश्वर के अनुग्रह और वरदान तो सभी लोगों की भलाई के लिए कितना कुछ और अधिक है। 16 और यह वरदान भी उस पापी के द्वारा लाए गए परिणाम के समान नहीं है क्योंकि दंड के हेतु न्याय का

आगमन एक अपराध के बाद हुआ था। किन्तु यह वरदान, जो दोष-मुक्ति की ओर ले जाता है, अनेक अपराधों के बाद आया था। 17 अतः यदि एक व्यक्ति की उस अपराध के कारण मृत्यु का शासन हो गया। तो जो परमेश्वर के अनुग्रह और उसके वरदान की प्रचुरता का-जिसमें धर्मी का निवास है-उपभोग कर रहे हैं-वे तो जीवन में उस एक व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा और भी अधिक शासन करेंगे।

18 सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक धर्म के काम के द्वारा सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने वाली धार्मिकता मिली। 19 अतः जैसे उस एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना दिये गये वैसे ही उस एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण सभी लोग धर्मी भी बना दिये जायेंगे। 20 व्यवस्था का आगमन इसलिये हुआ कि अपराध बढ़ पायें। किन्तु जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा। 21 ताकि जैसे मृत्यु के द्वारा पाप ने राज्य किया ठीक वैसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन को लाने के लिये परमेश्वर की अनुग्रह धार्मिकता के द्वारा राज्य करे।

### पाप के लिए मृत किन्तु मसीह में जीवित

6 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप ही करते रहें ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़ता रहे? 2 निश्चय ही नहीं। हम जो पाप के लिए मर चुके हैं पाप में ही कैसे जियेंगे? 3 या क्या तुम नहीं जानते कि हम, जिन्होंने यीशु मसीह में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का ही बपतिस्मा लिया है। 4 सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से हम भी उसके साथ ही गाड़ दिये गये थे ताकि जैसे परम पिता की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें।

5 क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं तो उसके जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ रहेंगे। 6 हम यह जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व यीशु के साथ ही क्रूस पर चढ़ा दिया गया था ताकि पाप से भरे हमारे शरीर नष्ट हो जायें। और हम आगे के लिये पाप के दास न बने रहें। 7 क्योंकि जो मर गया वह पाप के बन्धन से छुटकारा पा गया।

8 और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये, सो हमारा विश्वास है कि हम उसी के साथ जियेंगे भी। 9 हम जानते हैं कि मसीह जिसे मरे हुओं में से जीवित किया था अमर है। उस पर मौत का वश कभी नहीं चलेगा। 10 जो मौत वह मरा है, वह सदा के लिए पाप के लिए मरा है किन्तु जो जीवन वह जी रहा है, वह जीवन परमेश्वर के लिए है। 11 इसी तरह तुम अपने लिए भी

सोचो कि तुम पाप के लिए मर चुके हो किन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित हो।

12इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का वश न चले। ताकि तुम पाप की इच्छाओं पर कभी न चलो। 13अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के लिए पाप के हवाले न करो बल्कि मरे हुआओं में से जी उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो। और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता की सेवा के साधन के रूप में परमेश्वर के हवाले कर दो। 14तुम पर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के सहारे नहीं जीते हो बल्कि परमेश्वर की अनुग्रह के सहारे जीते हो।

### धार्मिकता के सेवक

15तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें? क्योंकि हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन जीते हैं। निश्चय ही नहीं। 16क्या तुम नहीं जानते कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए अपने आप को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम दास हो। फिर चाहे तुम पाप के दास बनो, जो तुम्हें मार डालेगा और चाहे आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मिकता की तरफ ले जायेगी। 17किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि यद्यपि तुम पाप के दास थे, तुमने अपने मन से उन उपदेशों की रीति को माना जो तुम्हें सौंपे गये थे। 18तुम्हें पापों से छुटकारा मिल गया और तुम धार्मिकता के सेवक बन गए हो। 19(मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ जिसे सभी लोग समझ सकें क्योंकि उसे समझना तुम लोगों के लिए कठिन है।) क्योंकि तुमने अपने शरीर के अंगों को अपवित्रता और व्यवस्था हीनता के आगे उनके दास के रूप में सौंप दिया था जिससे व्यवस्था हीनता पैदा हुई, अब तुम लोग ठीक वैसे ही अपने शरीर के अंगों को दास के रूप में धार्मिकता के हाथों सौंप दो ताकि संपूर्ण समर्पण उत्पन्न हो। 20क्योंकि तुम जब पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से तुम पर कोई बन्धन नहीं था। 21और देखो उस समय तुम्हें कैसा फल मिला? जिसके लिए आज तुम शर्मिन्दा हो। जिसका अंतिम परिणाम मृत्यु है। 22किन्तु अब तुम्हें पाप से छुटकारा मिल चुका है और परमेश्वर के दास बना दिये गये हो तो जो खेती तुम काट रहे हो, तुम्हें परमेश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण में ले जायेगी। जिसका अंतिम परिणाम है अनन्त जीवन। 23क्योंकि पाप का मजदूरी तो बस मृत्यु ही है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन, परमेश्वर का सेंटमेतका वरदान है।

### विवाह का दृष्टान्त

7 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं उन लोगों से कह रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं) कि व्यवस्था

का शासन किसी व्यक्ति पर तभी तक है जब तक वह जीता है? उदाहरण के लिए एक विवाहिता स्त्री अपने पति के साथ विधान के अनुसार तभी तक बँधी है जब तक वह जीवित है किन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह विवाह सम्बन्धी नियमों से छूट जाती है। 3पति के जीते जी यदि किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़े तो उसे व्यभिचारिणी कहा जाता है किन्तु यदि उसका पुरुष मर जाता है तो विवाह सम्बन्धी नियम उस पर नहीं लगता और इसीलिये यदि वह दूसरे पुरुष की हो जाती है तो भी वह व्यभिचारिणी नहीं है।

4हे मेरे भाइयो, ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये तुम भी मर चुके हो। इसीलिये अब तुम भी किसी दूसरे से नाता जोड़ सकते हो। उससे जिसे मरे हुआओं में से पुनर्जीवित किया गया है। ताकि हम परमेश्वर के लिए कर्मों की उत्तम खेती कर सकें। 5क्योंकि जब हम मानव स्वभाव के अनुसार जी रहे थे, हमारी पाप-पूर्ण वासनाएँ जो व्यवस्था के द्वारा आयी थीं, हमारे अंगों पर हावी थीं। ताकि हम कर्मों की ऐसी खेती करें जिसका अंत मौत में होता है। 6किन्तु अब हमें व्यवस्था से छुटकारा दे दिया गया है क्योंकि जिस व्यवस्था के अधीन हमें बंदी बनाया हुआ था, हम उसके लिये मर चुके हैं। और अब पुरानी लिखित व्यवस्था से नहीं, बल्कि आत्मा की नयी रीति से प्रेरित हो कर हम अपने स्वामी परमेश्वर की सेवा करते हैं।

### पाप से लड़ाई

7तो फिर हम क्या कहें? क्या हम कहें कि व्यवस्था पाप है? निश्चय ही नहीं। जो भी हो, यदि व्यवस्था नहीं होती तो मैं पहचान ही नहीं पाता कि पाप क्या है? यदि व्यवस्था नहीं बताती, “जो अनुचित है उसकी चाहत मत करो” तो निश्चय ही मैं पहचान ही नहीं पाता कि अनुचित इच्छा क्या है।”

8किन्तु पाप ने मौका मिलते ही व्यवस्था का लाभ उठाते हुए मुझमें हर तरह की ऐसी इच्छाएँ भर दीं जो अनुचित के लिए थीं। व्यवस्था के अभाव में पाप तो मर गया। 9एक समय मैं बिना व्यवस्था के ही जीवित था, किन्तु जब व्यवस्था का आदेश आया तो पाप जीवन में उभर आया। 10और मैं मर गया। वही व्यवस्था का आदेश जो जीवन देने के लिए था, मेरे लिये मृत्यु ले आया। 11क्योंकि पाप को अवसर मिल गया और उसने उसी व्यवस्था के आदेश के द्वारा मुझे छला और उसी के द्वारा मुझे मार डाला।

12इस तरह व्यवस्था पवित्र है और वह विधान पवित्र, धर्मी और उत्तम है। 13तो फिर क्या इसका यह अर्थ है कि जो उत्तम है, वही मेरी मृत्यु का कारण बना? निश्चय ही नहीं। बल्कि पाप उस उत्तम के द्वारा मेरे लिए मृत्यु का इसलिये कारण बना कि पाप को पहचाना

जा सके। और व्यवस्था के विधान के द्वारा उसकी भयानक पाप-पूर्णता दिखाई जा सके।

### मानसिक द्वन्द्व

14 क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है और मैं हाड़-मांस का भौतिक मनुष्य हूँ जो पाप की दासता के लिए बिका हुआ है। 15 मैं नहीं जानता मैं क्या कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं करता, बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा करता हूँ। 16 और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो मैं स्वीकार करता हूँ कि व्यवस्था उत्तम है। 17 किन्तु वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब कुछ कर रहा है, बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है। 18 हाँ, मैं जानता हूँ कि मुझ में यानी मेरे भौतिक मानव शरीर में किसी अच्छी वस्तु का वास नहीं है। नेकी करने की इच्छा तो मुझ में है पर नेक काम मुझ से नहीं होते। 19 क्योंकि जो अच्छा काम मैं करना चाहता हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं नहीं करना चाहता, वे ही बुरे काम मैं करता हूँ। 20 और यदि मैं वही काम करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो वास्तव में उनका कर्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझ में बसा है।

21 इसीलिए मैं अपने में यह नियम पाता हूँ कि मैं जब अच्छा करना चाहता हूँ, तो अपने में बुराई को ही पाता हूँ। 22 अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था को सहर्ष मानता हूँ। 23 पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे ही नियम को काम करते देखता हूँ यह मेरे चिन्तन पर शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे पाप की व्यवस्था का बन्दी बना लेता है। यह व्यवस्था मेरे शरीर में क्रियाशील है। 24 मैं एक अभागा इंसान हूँ। मुझे इस शरीर से, जो मौत का निवाला है, छुटकारा कौन दिलायेगा? 25 अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। सो अपने हाड़ मांस के शरीर से मैं पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी अपनी बुद्धि से परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।

### आत्मा से जीवन

8 इस प्रकार अब उनके लिये जो यीशु मसीह में स्थित हैं, कोई दण्ड नहीं है। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं।] \* 2 क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में जीवन देती है, तुझे पाप की व्यवस्था से जो मृत्यु की ओर ले जाती है, स्वतन्त्र कर दिया है। 3 जिसे मूसा की वह व्यवस्था जो मनुष्य के भौतिक स्वभाव के कारण दुर्बल बना दी गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने

अपने पुत्र को हमारे ही जैसे शरीर में भेजकर—जिससे हम पाप करते हैं—उसकी भौतिक देह को पाप वाली बनाकर पाप को निरस्त कर के पूरा किया। 4 जिससे कि हमारे द्वारा, जो देह की भौतिक विधि से नहीं, बल्कि आत्मा की विधि से जीते हैं, व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें।

5 क्योंकि वे जो अपने भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, उनकी बुद्धि मानव स्वभाव की इच्छाओं पर टिकी रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते हैं, उनकी बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभिलाषाओं में लगी रहती है। 6 भौतिक मानव स्वभाव के बस में रहने वाले मन का अन्त मृत्यु है; किन्तु आत्मा के वश में रहनेवाली बुद्धि का परिणाम है जीवन और शांति। 7 इस तरह भौतिक मानव स्वभाव से अनुशासित मन परमेश्वरका विरोधी है। क्योंकि वह न तो परमेश्वर के नियमों के अधीन है और न हो सकता है। 8 और वे जो भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9 किन्तु तुम लोग भौतिक मानव स्वभाव के अधीन नहीं हो, बल्कि आत्मा के अधीन हो यदि वास्तव में तुममें परमेश्वर की आत्मा का निवास है। किन्तु यदि किसी में यीशु मसीह की आत्मा नहीं है तो वह मसीह का नहीं है। 10 दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे तुम्हारी देह पाप के हेतु मर चुकी है पवित्र आत्मा, परमेश्वर के साथ तुम्हें धार्मिक ठहराकर स्वयं तुम्हारे लिए जीवन बन जाती है। 11 और यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया था, तुम्हारे भीतर वास करती है, तो वह परमेश्वर जिस ने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया था, तुम्हारे नाशवान शरीरों को अपनी आत्मा से जो तुम्हारे ही भीतर बसती है, जीवन देगा।

12 इसलिए मेरे भाइयो, हम पर इस भौतिक शरीर का कर्ज तो है किन्तु ऐसा नहीं कि हम इसके अनुसार जियें। 13 क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे तो मरोगे। किन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के व्यवहारों को मारोगे दोगे तो तुम जी जाओगे।

14 जो परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं। 15 क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें मिली है, तुम्हें फिर से दास बन डरने के लिए नहीं है, बल्कि वह आत्मा जो तुमने पायी है तुम्हें परमेश्वर की संपालित संतान बनाती है। जिससे हम पुकार उठते हैं, “हे अब्बा, हे पिता!” 16 वह पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिल कर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। 17 और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम भी उत्तराधिकारी हैं, परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के साथ हम उत्तराधिकारी यदि वास्तव में उसके साथ दुःख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महिमा मिलेगी ही।

### हमें महिमा मिलेगी

18क्योंकि मेरे विचार में इस समय की हमारी यातनाएँ प्रकट होने वाली भावी महिमा के आगे कुछ भी नहीं है। 19क्योंकि यह सृष्टि बड़ी आशा से उस समय का इंतजार कर रही है जब परमेश्वर की संतान को प्रकट किया जायेगा। 20यह सृष्टि निःसार थी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसकी इच्छा से जिसने इसे इस आशा के अधीन किया कि यह भी कभी अपनी विनाशमानता से छुटकारा पा कर परमेश्वर की संतान की शानदार स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी।

22क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक समूची सृष्टि पीड़ा में कराहती और तड़पती रही है। 23न केवल यह सृष्टि बल्कि हम भी जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला है, अपने भीतर कराहते रहे हैं। क्योंकि हमें उसके द्वारा पूरी तरह अपनाये जाने का इंतजार है कि हमारी देह-मुक्ति हो जायेगी। 24हमारा उद्धार हुआ है। इसी से हमारे मन में आशा है किन्तु जब हम जिसकी आशा करते हैं, उसे देख लेते हैं तो वह आशा नहीं रहती। जो दिख रहा है उसकी आशा कौन कर सकता है। 25किन्तु यदि जिसे हम देख नहीं रहे उसकी आशा करते हैं तो धीरज और सहनशीलता के साथ उसकी बात जोहते हैं।

26ऐसे ही जैसे हम कराहते हैं, आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करने आती है क्योंकि हम नहीं जानते कि हम किसके लिये प्रार्थना करें। किन्तु आत्मा स्वयं ऐसी आहें भर कर जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, हमारे लिए विनती करती है। 27किन्तु वह अन्तर्यामी जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा से ही वह परमेश्वर के पवित्र जनों के लिए मध्यस्थता करती है।

28और हम जानते हैं कि हर परिस्थिति में वह आत्मा परमेश्वर के भक्तों के साथ मिल कर वह काम करता है जो भलाई ही लाते हैं उन सब के लिए जिन्हें उसने प्रयोजन के अनुसार ही बुलाया गया है। 29जिन्हें उसने पहले ही चुना उन्हें पहले ही अपने पुत्र के रूप में ठहराया ताकि बहुत से भाइयों में वह सबसे बड़ा भाई बन सके। 30जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया, उन्हें भी उसने बुलाया और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया। और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी प्रदान की।

### परमेश्वर का प्रेम

31तो इसे देखते हुए हम क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है? 32उसने जिसने अपने पुत्र तक को बचा कर नहीं रखा बल्कि उसे हम सब के लिए मरने को सौंप दिया। वह भला हमें उसके साथ और सब कुछ क्यों नहीं देगा? 33परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर ऐसा कौन है जो, दोष

लगायेगा? वह परमेश्वर ही है जो उन्हें निर्दोष ठहराता है। 34ऐसा कौन है जो उन्हें दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु वह है जो मर गया और (और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि) उसे फिर जिलाया गया। जो परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है और हमारी ओर से विनती भी करता है 35कौन है जो हमें मसीह के प्यार से अलग करेगा? यातना या कठिनाई या अत्याचार या अकाल या नंगापन या जोखिम या तलवार? 36जैसा कि शास्त्र कहता है:

“तेरे (मसीह) लिए सारे दिन हमें मौत को सौंपा जाता है। हम काटी जाने वाली भेड़ जैसे समझे जाते हैं।”

भजन संहिता 44:22

37तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब बातों में हम एक शानदार विजय पा रहे हैं। 38क्योंकि मैं मान चुका हूँ कि न मृत्यु और न जीवन, न स्वर्गदूत और न शासन करने वाली आत्माएँ, न वर्तमान की कोई वस्तु और न भविष्य की कोई वस्तु, न आत्मिक शक्तियाँ, 39न कोई हमारे ऊपर का, और न हमसे नीचे का, न सृष्टि की कोई और वस्तु हमें प्रभु के उस प्रेम से, जो हमारे भीतर प्रभु यीशु मसीह के प्रति है, हमें अलग कर सकेगी।

### परमेश्वर और यहूदी लोग

9 मैं मसीह में सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं कहता और मेरी चेतना जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशित है, मेरे साथ मेरी साक्षी देती है कि मुझे गहरा दुःख है और मेरे मन में निरन्तर पीड़ा है। 3काश मैं चाह सकता कि अपने भाई बंधों और दुनियावी संबन्धियों के लिए मैं मसीह का शाप अपने ऊपर ले लेता और उससे अलग हो जाता।

4जो इस्त्राएली हैं और जिन्हें परमेश्वर की संपालित संतान होने का अधिकार है, जो परमेश्वर की महिमा का दर्शन कर चुके हैं, जो परमेश्वर के करार के भागीदार हैं। जिन्हें मूसा की व्यवस्था, सच्ची उपासना और वचन प्रदान किया गया है। 5पुरखे उन्हीं से सम्बन्ध रखते हैं और मानव शरीर की दृष्टि से मसीह उन्हीं में पैदा हुआ जो सब का परमेश्वर है और सदा धन्य है! आमीन।

6ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा नहीं किया है क्योंकि जो इस्त्राएल के वंशज हैं, वे सभी इस्त्राएली नहीं हैं। 7और न ही इब्राहीम के वंशज होने के कारण वे सब सचमुच इब्राहीम की संतान हैं। बल्कि (जैसा परमेश्वर ने कहा), “तेरे वंशज इसहाक के द्वारा अपनी परम्परा बढ़ाएंगे।” \*

“तेरे वंशज ... बढ़ाएंगे” उत्पत्ति 21:12

8अर्थात् यह नहीं है कि प्राकृतिक तौर पर शरीर से पैदा होने वाले बच्चे परमेश्वर के वंशज हैं, बल्कि परमेश्वर के वचन से प्रेरित होने वाले उसके वंशज माने जाते हैं। 9वचन इस प्रकार कहा गया था: “निश्चित समय पर मैं लौटूँगा और सारा पुत्रवती होगी।”\*

10इतना ही नहीं जब रिबका भी एक व्यक्ति, हमारे पूर्व पिता इसहाक से गर्भवती हुई 11तो बेटों के पैदा होने से पहले और उनके कुछ भी भला बुरा करने से पहले कहा गया था जिससे परमेश्वर का वह प्रयोजन सिद्ध हो जो चुनाव से सिद्ध होता है। 12और जो व्यक्ति के कर्मों पर नहीं टिका बल्कि उस परमेश्वर पर टिका है जो बुलाने वाला है। रिबका से कहा गया, “बड़ा बेटा छोटे बेटे की सेवा करेगा।”\* 13शास्त्र कहता है: “मैंने याकूब को चुना और एसाव को नकार दिया।”\*

14तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है? 15निश्चय ही नहीं। क्योंकि उसने मूसा से कहा था, “मैं जिस किसी पर भी दया करने की सोचूँगा, दया दिखाऊँगा। और जिस किसी पर भी अनुग्रह करना चाहूँगा, अनुग्रह करूँगा।”\* 16इसलिये न तो यह किसी की इच्छा पर निर्भर करता है और न किसी की दौड़ धूप पर बल्कि दयालु परमेश्वर पर निर्भर करता है। 17क्योंकि शास्त्र में परमेश्वर ने फिरौन से कहा था, “मैंने तुझे इसीलिए खड़ा किया था कि मैं अपनी शक्ति तुझ में दिखा सकूँ। और मेरा नाम समूची धरती पर घोषित किया जाये।”\* 18सो परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे चाहता है कठोर बना देता है।

19तो फिर तू शायद मुझ से कहे, “यदि हमारे कर्मों का नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है तो फिर भी वह उसमें हमारा दोष क्यों समझता है?” आखिरकार उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है? 20मनुष्य तू कौन होता है जो परमेश्वर को उलट कर उत्तर दे? क्या कोई रचना अपने रचने वाले से पूछ सकती है, “तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?” 21क्या किसी कुम्हार को मिट्टी पर यह अधिकार नहीं है कि वह किसी एक लौदे से एक बरतनों विशेष प्रयोजन के लिए और दूसरा हीन प्रयोजन के लिए बनाये?

22किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी शक्ति जताने के लिए उन बरतनों की, जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को था, बड़े धीरज के साथ सही, 23उसने उनकी सही

ताकि वह उन भाँड़ों के लाभ के लिए जो दया के पात्र थे और जिन्हें उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया था, उन पर अपनी महिमा प्रकट कर सके। 24अर्थात् हम जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि गैर यहूदियों में से भी 25जैसा कि होशे की पुस्तक में लिखा है:

“जो लोग मेरे नहीं थे उन्हें मैं अपना कहूँगा। और वह स्त्री जो प्रिय नहीं थी मैं उसे प्रिया कहूँगा।”

होशे 2:23

26“और वैसा ही घटेगा जैसा उसी भाग में उनसे कहा गया था, ‘तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो।’ वहीं वे जीवित परमेश्वर की सन्तान कहलाएँगे।” होशे 1:10

27और यशायाह इम्राएल के बारे में पुकार कर कहता है:

“यद्यपि इम्राएल की सन्तान समुद्र की बालू के कणों के समान असंख्य हैं तो भी उनमें से केवल थोड़े ही बच पायेंगे।

28क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर अपने न्याय को पूरी तरह से और जल्दी ही पूरा करेगा।”\*

29और जैसे यशायाह ने भविष्यवाणी की थी:

“यदि सर्वशक्तिशाली प्रभु हमारे लिए वंशज न छोड़ता तो हम सदोम जैसे और अमोरा जैसे ही हो जाते।”\*

30तो फिर हम क्या कहें? हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अन्य जातियों के लोग जो धार्मिकता की खोज में नहीं थे, उन्होंने धार्मिकता को पा लिया है। वे जो विश्वास के कारण ही धार्मिक ठहराए गए। 31किन्तु इम्राएल के लोगों ने जो ऐसी व्यवस्था पर चलना चाहते थे जो उन्हें धार्मिक ठहराती, उसके अनुसार नहीं जी सके। 32क्यों नहीं? क्योंकि वे इसका पालन विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से कर रहे थे, वे उस चट्टान पर ठोकर खा गये, जो ठोकर दिलाती है। 33जैसा कि शास्त्र कहता है:

“देखो, मैं सिथ्योन में एक पत्थर रख रहा हूँ जो ठोकर दिलाता है और एक चट्टान जो अपराध कराती है। किन्तु वह जो उस में विश्वास करता है, उसे कभी निराश नहीं होना होगा।” यशायाह 8:14;23:16

**10** हे भाइयो, मेरे हृदय की इच्छा है और मैं परमेश्वर से उन सब के लिये प्रार्थना करता हूँ कि उनका उद्धार हो 2क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि उनमें परमेश्वर की धुन है। किन्तु वह ज्ञान पर नहीं टिकी है 3क्योंकि वे उस धार्मिकता को नहीं जानते थे जो परमेश्वर

“निश्चित ... होगी” उत्पत्ति 18:10,14

“बड़ा ... करेगा” उत्पत्ति 25:23

“मैंने याकूब ... दिया” मलाकी 1:2-3

“मैं ... करूँगा” निर्गमन 33:19

“मैंने ... जाये” निर्गमन 9:16

“यद्यपि ... करेगा” यशायाह 10:22-23

“यदि ... जात” यशायाह 1:9

से मिलती है और वे अपनी ही धार्मिकता की स्थापना का जतन करते रहे सो उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं स्वीकारा। 4मसीह ने व्यवस्था का अंत किया ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर के लिए धार्मिक हो।

5धार्मिकता के बारे में जो व्यवस्था से प्राप्त होती है, मूसा ने लिखा है, “जो व्यवस्था के नियमों पर चलेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।” \* 6किन्तु विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता के विषय में शास्त्र यह कहता है, “तू अपने से यह मत पूछ, ‘स्वर्ग में ऊपर कौन जायेगा?’ \*” (यानी, “मसीह को नीचे धरती पर लाने।”) 7“या, ‘नीचे पाताल में कौन जायेगा?’” (यानी, “मसीह को धरती के नीचे से ऊपर लाने।” यानी मसीह को मरे हुआओं में से वापस लाने।”) \* 8शास्त्र यह कहता है, “वचन तेरे पास है, तेरे ओठों पर है और तेरे मन में है।” \* यानी विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते हैं। 9कि यदि तू अपने मुँह से कहे, “यीशु मसीह प्रभु है” और तू अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जीवित किया तो तेरा उद्धार हो जायेगा। 10क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और अपने मुँह से उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार होता है। 11शास्त्र कहता है, “जो कोई उसमें विश्वास रखता है उसे निराश नहीं होना पड़ेगा।” \* 12यह इसलिये है कि यहूदियों और गैर यहूदियों में कोई भेद नहीं क्योंकि सब का प्रभु तो एक ही है। और उसकी दया उन सब के लिये, जो उसका नाम लेते हैं, अपरम्पार है। 13“हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।” \*

14किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उसका नाम कैसे पुकारेंगे? और वे जिन्होंने उसके बारे में सुना ही नहीं, उसमें विश्वास कैसे कर पायेंगे? और फिर भला जब तक कोई उन्हें उपदेश देने वाला न हो, वे कैसे सुन सकेंगे? 15और उपदेशक तब तक उपदेश कैसे दे पायेंगे जब तक उन्हें भेजा न गया हो? जैसा कि शास्त्रों में कहा है: “सुसमाचार लाने वालों के चरण कितने सुंदर हैं।” \*

16किन्तु सब ने सुसमाचार को स्वीकारा नहीं। यशायाह कहता है, “हे प्रभु, हमारे उपदेश को किसने स्वीकार

“जो ... रहेगा” लैव्य. 18:5

“तू अपने ... कौन जायेगा” व्यवस्था. 30:12

“मसीह ... लाने” व्यवस्था. 30:12

“वचन ... है” व्यवस्था. 30:14

“जो ... पड़ेगा” यशा. 28:16

“हर ... पायेगा” योएल 2:32

“सुसमाचार ... है” यशा. 52:7

किया?” \* 17सो उपदेश के सुनने से विश्वास उपजता है और उपदेश तब सुना जाता है जब कोई मसीह के विषयमें उपदेश देता है।

18किन्तु मैं कहता हूँ, “क्या उन्होंने हमारे उपदेश को नहीं सुना?” हाँ, निश्चय ही। शास्त्र कहता है:

“उनका स्वर समूची धरती पर फैल गया और उनके वचन जगत के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचें।”

भजन संहिता 19:4

19किन्तु मैं पूछता हूँ, “क्या इज़्राएली नहीं समझते थे?” मूसा कहता है:

“पहले मैं तुम लोगों के मन में ऐसे लोगों के द्वारा जो वास्तव में कोई जाति नहीं है, डाह पैदा करूँगा। मैं विश्वासहीन जाति के द्वारा तुम्हें क्रोध दिलाऊँगा।”

व्यवस्था विवरण 32:21

20फिर यशायाह साहस के साथ कहता है:

“मुझे उन लोगों ने पा लिया जो मुझे नहीं खोज रहे थे। मैं उनके लिए प्रकट हो गया जो मेरी खोज खबर में नहीं थे।”

यशायाह 65:1

21किन्तु परमेश्वर ने इज़्राएलियों के बारे में कहा है, “मैं सारे दिन आज्ञा न मानने वाले और अपने विरोधियों के आगे हाथ फैलाए रहा।” \*

### परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

1 तो मैं पूछता हूँ, “क्या परमेश्वर ने अपने ही लोगों को नकार नहीं दिया?” निश्चय ही नहीं। क्योंकि मैं भी एक इज़्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश से और बैजामिन के गोत्र से हूँ। 2परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं नकारा जिन्हें उसने पहले से ही चुना था। अथवा क्या तुम नहीं जानते कि एलिय्याह के बारे में शास्त्र क्या कहता है जब एलिय्याह परमेश्वर से इज़्राएल के लोगों के विरोध में प्रार्थना कर रहा था? 3“हे प्रभु, उन्होंने तेरे नबियों को मार डाला। तेरी वेदियों को तोड़ कर गिरा दिया। केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मार डालने का जतन कर रहे हैं।” \* 4किन्तु तब परमेश्वर ने उसे कैसे उत्तर दिया था, “मैंने अपने लिए सात हजार लोग बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका।” 5सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे लोग बचे हैं जो उसके अनुग्रह के कारण चुने हुए हैं। 6और यदि यह परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है तो लोग जो कर्म करते हैं, यह उन कर्मों का परिणाम नहीं

“हे प्रभु ... किया” यशा. 53:1

“मैं ... रहा” यशा. 65:2

“हे प्रभु ... है” 1 राजा 19:10-14

है। नहीं तो परमेश्वर का अनुग्रह, अनुग्रह ही नहीं ठहरती। 7तो इससे क्या? इज़्राएल के लोग जिसे खोज रहे थे, वे उसे नहीं पा सके। किन्तु चुने हुएों को वह मिल गया। जबकि बाकी सब को जड़ बना दिया गया। 8शास्त्र कहता है:

“परमेश्वर ने उन्हें एक चेतना शून्यआत्मा प्रदान की”  
यशायाह 29:10

“ऐसी आँखें दीं जो देख नहीं सकती थीं और ऐसे कान दिए जो सुन नहीं सकते थे। और यही दशा ठीक आज तक बनी हुई है।”  
व्यवस्था विवरण 29:4

9दाऊद कहता है: “अपने ही भोगों में फँसकर वे बंदी बन जाएँ उनका पतन हो और उन्हें दण्ड मिले।

10उनकी आँखें धुंधली हो जायें ताकि वे देख न सकें और तू उनकी पीड़ाओं तले, उनकी कमर सदा-सदा झुकाए रखे।”  
भजन संहिता 69:22-23

11सो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई कि वे गिर कर नष्ट हो जायें? निश्चय ही नहीं। बल्कि उनके गलती करने से गैर यहूदी लोगों को छुटकारा मिला ताकि यहूदियों में स्पर्धा पैदा हो। 12इस प्रकार यदि उनके गलती करने का अर्थ सारे संसार का बड़ा लाभ है और यदि उनके भटकने से गैर यहूदियों का लाभ है तो उनकी संपूर्णता से तो बहुत कुछ होगा।

13यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, जो यहूदी नहीं हो। क्योंकि मैं विशेष रूप से गैर-यहूदियों के लिये प्रेरित हूँ, मैं अपने काम के प्रति पूरा प्रयत्नशील हूँ 14इस आशा से कि मैं अपने लोगों में भी स्पर्धा जगा सकूँ और उनमें से कुछ का उद्धार करूँ। 15क्योंकि यदि परमेश्वर के द्वारा उनके नकार दिये जाने से जगत् में परमेश्वर के साथ मेलमिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया जाना क्या मरे हुएों में से जिलाया जाना नहीं होगा?

16यदि हमारी भेंट का एक भाग पवित्र है तो क्या वह समूचा ही पवित्र नहीं है? यदि पेड़ की जड़ पवित्र है तो उसकी शाखाएँ भी पवित्र हैं।

17किन्तु यदि कुछ शाखाएँ तोड़ कर फेंक दी गयीं और तू जो एक जँगली जैतून की टहनੀ है उस पर पेबंद चढ़ा दिया जाये और वह जैतून के अच्छे पेड़ की जड़ों की शक्ति का हिस्सा बटाने लगे 18तो तुझे उन टहनियों के आगे, जो तोड़ कर फेंक दी गयीं, अभिमान नहीं करना चाहिये। और यदि तू अभिमान करता है तो याद रख यह तू नहीं है जो जड़ों को पाल रहा है, बल्कि यह तो वह जड़ ही है जो तुझे पाल रही है। 19अब तू कहेगा, “हाँ, किन्तु शाखाएँ इसलिये तोड़ी गयीं कि मेरा पेबंद चढ़े।” 20यह सत्य है, वे अपने अविश्वास के कारण तोड़ फेंकी गयीं किन्तु तुम अपने विश्वास के बल पर

अपनी जगह टिके रहे। इसलिये इसका गर्व मत कर बल्कि डरता रह। 21यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक डालियाँ नहीं रहने दीं तो वह तुझे भी नहीं रहने देगा।

22इसलिये तू परमेश्वर की कोमलता को देख और उसकी कठोरता पर ध्यान दे। यह कठोरता उनके लिए है जो गिर गये किन्तु उसकी करुणा तेरे लिये है यदि तू अपने पर उसका अनुग्रह बना रहने दे। नहीं तो पेड़ से तू भी काट फेंका जायेगा। 23और यदि वे अपने अविश्वास में न रहें तो उन्हें भी फिर पेड़ से जोड़ लिया जायेगा क्योंकि परमेश्वर समर्थ है कि उन्हें फिर से जोड़ दे। 24जब तुझे प्राकृतिक रूप से जँगली जैतून के पेड़ से एक शाखा की तरह काट कर प्रकृति के विरुद्ध एक उत्तम जैतून के पेड़ से जोड़ दिया गया, तो ये जो उस पेड़ की अपनी डालियाँ हैं, अपने ही पेड़ में आसानी से, फिर से क्यों नहीं जोड़ दी जायेंगी।

25हे भाइयो! मैं तुम्हें इस छिपे हुए सत्य से अंजान नहीं रखना चाहता। (कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझने लगे) कि इज़्राएल के कुछ लोग ऐसे ही कठोर बना दिए गए हैं और ऐसे ही कठोर बने रहेंगे जब तक कि काफी गैर यहूदी परमेश्वर के परिवार के अंग नहीं बन जाते। 26और इस तरह समुचे इज़्राएल का उद्धार होगा। जैसा कि शास्त्र कहता है:

“उद्धार करने वाला सिंथ्योन से आयेगा। वह याकूब के परिवार से सभी बुराइयाँ दूर करेगा।

27मेरा यह वाचा उनके साथ तब होगा जब मैं उनके पापों को हर लूँगा।”  
यशायाह 59:20-21; 27:9

28जहाँ तक सुसमाचार का सम्बन्ध है, वे तुम्हारे हित में परमेश्वर के शत्रु हैं किन्तु जहाँ तक परमेश्वर द्वारा उनके चुने जाने का सम्बन्ध है, वे उनके पुरखों को दिये वचन के अनुसार परमेश्वर के प्यारे हैं। 29क्योंकि परमेश्वर जिसे बुलाता है और जिसे वह देता है, उसकी तरफ से अपना मन कभी नहीं बदलता। 30क्योंकि जैसे तुम लोग पहले कभी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे किन्तु अब तुम्हें उसकी अवज्ञा के कारण परमेश्वर की दया प्राप्त है। 31वैसे ही अब वे उसकी आज्ञा नहीं मानते क्योंकि परमेश्वर की दया तुम पर है। ताकि अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले। 32क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को अवज्ञा के कारागार में इसीलिए डाल रखा है कि वह उन पर दया कर सके।

### परमेश्वर धन्य है

33परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान कितने अपरम्पार हैं। उसके न्याय कितने गहन हैं; उसके रास्ते कितने गूढ़ हैं। शास्त्र कहता है:

34“प्रभु के मन को कौन जानता है? और उसे सलाह देने वाला कौन हो सकता है?”  
यशायाह 40:13

35“परमेश्वर को किसी ने क्या दिया है कि वह किसी को उसके बदले कुछ दे।” अथ्यूब 41:11

36क्योंकि सब का रचने वाला वही है। उसी से सब स्थिर हैं और यह उसी के लिए है। उसकी सदा महिमा हो! आमीन।

### अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

**12** इसलिए हे भाइयो, परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है। 2अब और आगे इस दुनिया की रीति पर मत चलो बल्कि अपने मनों को नया करके अपने आप को बदल डालो ताकि तुम्हें पता चल जाये कि परमेश्वर तुम्हारे लिए क्या चाहता है। यानी जो उत्तम है, जो उसे भाता है और जो सम्पूर्ण है।

3इसलिये उसके अनुग्रह के कारण जो उपहार उसने मुझे दिया है, उसे ध्यान में रखते हुए मैं तुममें से हर एक से कहता हूँ, अपने को यथोचित समझो अर्थात् जितना विश्वास उसने तुम्हें दिया है, उसी के अनुसार अपने को समझना चाहिये। 4क्योंकि जैसे हममें से हर एक के शरीर में बहुत से अंग हैं। चाहे सब अंगों का काम एक जैसा नहीं है। 5हम अनेक हैं किन्तु मसीह में हम एक देह के रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार हर एक अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है। 6तो फिर उसके अनुग्रह के अनुसार हमें जो अलग-अलग उपहार मिले हैं, हम उनका प्रयोग करें। यदि किसी को भविष्यवाणी की क्षमता दी गयी है तो वह उसके पास जितना विश्वास है उसके अनुसार भविष्यवाणी करे। 7यदि किसी को सेवा करने का उपहार मिला है तो अपने आप को सेवा के लिये अर्पित करे, यदि किसी को उपदेश देने का काम मिला है तो उसे अपने आप को प्रचार में लगाना चाहिये। 8यदि कोई सलाह देने को है तो उसे सलाह देनी चाहिये। यदि किसी को दान देने का उपहार मिला है तो उसे मुक्त भाव से दान देना चाहिए। यदि किसी को अगुआई करने का उपहार मिलता है तो वह लगन के साथ अगुआई करे। जिसे दया दिखाने को मिली है, वह प्रसन्नता से दया करे।

9तुम्हारा प्रेम सच्चा हो। बदी से घृणा करो। नेकी से जुड़ो। 10भाई चारे के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित रहो। आपस में एक दूसरे को आदर के साथ अपने से अधिक महत्त्व दो। 11उत्साही बनो, आलसी नहीं, आत्मा के तेज से चमको। प्रभु की सेवा करो। 12अपनी आशा में प्रसन्न रहो। विपत्ति में धीरज धरो। निरन्तर प्रार्थना करते रहो। 13परमेश्वर के जनों की आवश्यकताओं में हाथ बटाओ। अतिथि-सत्कार के अवसर ढूँढते रहो।

14जो तुम्हें सताते हों उन्हें आशीर्वाद दो। उन्हें शाप मत दो, आशीर्वाद दो। 15जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न रहो। जो दुःखी हैं, उनके दुःख में दुःखी होओ। 16मेल-मिलाप से रहो। अभिमान मत करो बल्कि दीनों की संगति करो। अपने को बुद्धिमान मत समझो।

17बुराई का बदला बुराई से किसी को मत दो। सभी लोगों की आँखों में जो अच्छा हो उसे ही करने की सोचो। 18जहाँ तक बन पड़े सब मनुष्यों के साथ शांति से रहो। 19किसी से अपने आप बदला मत लो। मेरे मित्रों, बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध पर छोड़ दो क्योंकि शास्त्र में लिखा है: “प्रभु ने कहा है बदला लेना मेरा काम है। प्रतिदान में दूँगा।” \* 20“बल्कि तू तो यदि तेरा शत्रु भूखा है तो उसे भोजन करा, यदि वह प्यासा है तो उसे पीने को दे। क्योंकि यदि तू ऐसा करता है तो वह तुझे से शर्मिन्दा होगा।” \* 21बदी से मत हार बल्कि अपनी नेकी से बदी को हरा दे।

**13** हर व्यक्ति को प्रधान सत्ता की अधीनता स्वीकारनी चाहिये। क्योंकि शासन का अधिकार परमेश्वर की ओर से है। और जो अधिकार मौजूद हैं उन्हें परमेश्वर ने नियत किया है। 2इसलिए जो सत्ता का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है। और जो परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करते हैं, वे दण्ड पायेंगे। 3अब देखो कोई शासक, उस व्यक्ति को, जो नेकी करता है, नहीं डराता बल्कि उसी को डराता है, जो बुरे काम करता है। यदि तुम सत्ता से नहीं डरना चाहते हो, तो भले काम करते रहो। तुम्हें सत्ता की प्रशंसा मिलेगी। 4जो सत्ता में है वह परमेश्वर का सेवक है वह तेरा भला करने के लिए है। किन्तु यदि तू बुरा करता है तो उससे डर क्योंकि उसकी तलवार बेकार नहीं है। वह परमेश्वर का सेवक है जो बुरा काम करने वालों पर परमेश्वर का क्रोध लाता है। 5इसलिये समर्पण आवश्यक है। न केवल डर के कारण बल्कि तुम्हारी अपनी चेतना के कारण।

6इसलिये तो तुम लोग कर भी चुकाते हो क्योंकि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं जो अपने कर्तव्यों को ही पूरा करने में लगे रहते हैं। 7 जिस किसी का तुझे देना है, उसे चुका दे। जो कर तुझे देना है, उसे दे। जिसकी चुंगी तुझ पर निकलती है, उसे चुंगी दे। जिससे तुझे डरना चाहिये, तू उससे डर। जिसका आदर करना चाहिये उसका आदर कर।

### प्रेम ही विधान है

8आपसी प्रेम के अलावा किसी का ऋण अपने ऊपर मत रख क्योंकि जो अपने साथियों से प्रेम करता है, वह

“प्रभु ... दूँगा” व्यख्या. 32:35

“बल्कि ... होगा” नीति. 25:21-22

इस प्रकार व्यवस्था को ही पूरा करता है। 9मैं यह इसलिये कह रहा हूँ, “व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, लालच मत रख।” \* और जो भी दूसरी व्यवस्थाएँ हो सकती हैं, इस वचन में समा जाती हैं, “तुझे अपने साथी को ऐसे ही प्यार करना चाहिये, जैसे तू अपने आप को करता है।” \* 10प्रेम अपने साथी का बुरा कभी नहीं करता। इसीलिए प्रेम करना व्यवस्था के विधान को पूरा करना है।

11यह सब कुछ तुम इसलिये करो कि जैसे समय में तुम रह रह हो, उसे जानते हो। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये अपनी नींद से जागने का समय आ पहुँचा है, क्योंकि जब हमने विश्वास धारण किया था हमारा उद्धार अब उससे अधिक निकट है। 12“रात” लगभग पूरी हो चुकी है, “दिन” पास ही है, इसलिए आओ हम उन कर्मों से छुटकारा पा लें जो अंधकार के हैं। आओ हम प्रकाश के अस्त्रों को धारण करें। 13इसलिए हम वैसे ही उत्तमरीति से रहें जैसे दिन के समय रहते हैं। बहुत अधिक दावतों में जाते हुए खा पीकर धुत्त न हो जाओ। लुच्चेपन दुराचार व्यभिचार में न पड़ें। न झगड़ें और न ही डाह रखें। 14बल्कि प्रभु यीशु मसीह को धारण करें। और अपनी मानव देह की इच्छाओं को पूरा करने में ही मत लगे रहो।

### दूसरों में दोष मत निकाल

**14** जिसका विश्वास दुर्बल है, उसका भी स्वागत करो किन्तु मतभेदों पर झगड़ा करने के लिए नहीं। 2कोई मानता है कि वह सब कुछ खा सकता है, किन्तु कोई दुर्बल व्यक्ति बस साग-पात ही खाता है। 3तो वह जो हर तरह का खाना खाता है, उसे उस व्यक्ति को हीन नहीं समझना चाहिये जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता। वैसे ही वह जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता है, उसे सब कुछ खाने वाले को बुरा नहीं कहना चाहिये। क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपना लिया है। 4तू किसी दूसरे घर के दास पर दोष लगाने वाला कौन होता है? उसका अनुमोदन या उसे अनुचित ठहराना स्वामी पर ही निर्भर करता है। वह अवलम्बित रहेगा क्योंकि उसे प्रभु ने अवलम्बित होकर टिके रहने की शक्ति दी।

5और फिर कोई किसी एक दिन को सब दिनों से श्रेष्ठ मानता है और दूसरा उसे सब दिनों के बराबर मानता है तो हर किसी को पूरी तरह अपनी बुद्धि की बात माननी चाहिये। 6जो किसी विशेष दिन को मनाता है वह उसे प्रभु को आदर देने के लिये ही मनाता है। और जो सब कुछ खाता है वह भी प्रभु को आदर देने के लिये ही खाता है। क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद

करता है। और जो किन्हीं वस्तुओं को नहीं खाता, वह भी ऐसा इसीलिए करता है क्योंकि वह भी प्रभु को ही आदर देना चाहता है। वह भी परमेश्वर को ही धन्यवाद देता है। 7हम में से कोई भी न तो अपने लिये जीता है, और न अपने लिये मरता है। 8हम जीते हैं तो प्रभु के लिये और यदि मरते हैं तो भी प्रभु के लिये। सो चाहे हम जियें चाहे मरें, हम हैं तो प्रभु के ही।

9इसीलिये मसीह मरा; और इसीलिए जी उठा ताकि वह, वे जो अब मर चुके हैं और वे जो अभी जीवित हैं, दोनों का प्रभु हो सके। 10सो तू अपने विश्वास में सशक्त भाई पर दोष क्यों लगाता है? या तू अपने विश्वास में निर्बल भाई को हीन क्यों मानता है? हम सभी को परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा होना है। 11शास्त्र में लिखा है: “प्रभु ने कहा है, मेरे जीवन की शपथ हर किसी को मेरे सामने घुटने टेकने होंगे। और हर जुबान परमेश्वर को पहचानेगी।”

12सो हममें से हर एक को परमेश्वर के आगे अपना लेखा-जोखा देना होगा।

### पाप के लिए प्रेरित मत कर

13सो हम आपस में दोष लगाना बंद करें और यह निश्चय करें कि अपने भाई के रास्ते में हम कोई अड़चन खड़ी नहीं करेंगे और न ही उसे पाप के लिये उकसायेंगे। 14प्रभु यीशु में आस्थावान होने के कारण मैं मानता हूँ कि अपने आप में कोई भोजन अपवित्र नहीं है। वह केवल उसके लिए अपवित्र है, जो उसे अपवित्र मानता है। उसके लिए उसका खाना अनुचित है। 15यदि तेरे भाई को तेरे भोजन से ठेस पहुँचती है तो तू वास्तव में प्यार का व्यवहार नहीं कर रहा। तो तू अपने भोजन से उसे ठेस मत पहुँचा क्योंकि मसीह ने उस तक के लिए भी अपने प्राण तजे। 16सो जो तेरे लिए अच्छा है उसे निन्दनीय मत बनने दे। 17क्योंकि परमेश्वर का राज्य बस खाना-पीना नहीं है बल्कि वह तो धार्मिकता है, शांति है, और पवित्र आत्मा से प्राप्त आनन्द है। 18जो मसीह की इस तरह सेवा करता है, उससे परमेश्वर प्रसन्न रहता है और लोग उसे सम्मान देते हैं। 19इसलिए, उन बातों में लगे जो शांति को बढ़ाती हैं और जिनसे एक दूसरे को आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता मिलती है। 20भोजन के लिये परमेश्वर के काम को मत बिगाड़ो। हर तरह का भोजन पवित्र है किन्तु किसी भी व्यक्ति के लिये वह कुछ भी खाना ठीक नहीं है जो किसी और भाई को पाप के रास्ते पर ले जाये। 21माँस नहीं खाना श्रेष्ठ है, शराब नहीं पीना अच्छा है और कुछ भी ऐसा नहीं करना उत्तम है जो तेरे भाई को पाप में ढकेलता हो।

22अपने विश्वास को परमेश्वर और अपने बीच ही रख। वह धन्य है जो जिसे उत्तम समझता है, उसके लिए

“व्यभिचार ... रख” निर्गमन 20:13-15,17

“तुझे ... है” लैव्य. 19:18

अपने को दोषी नहीं पाता। 23किन्तु यदि कोई ऐसी वस्तु को खाता है, जिसके खाने के प्रति वह आश्वस्त नहीं है तो वह दोषी ठहरता है। क्योंकि उसका खाना उसके विश्वास के अनुसार नहीं है और वह सब कुछ जो विश्वास पर नहीं टिका है, पाप है।

**15** हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें उनकी दुर्बलता सहनी चाहिये जो शक्तिशाली नहीं हैं। हम बस अपने आपको ही प्रसन्न न करें। 2हम में से हर एक, दूसरों की अच्छाइयों के लिए इस भावना के साथ कि उनकी आत्मिक बढ़ोतरी हो, उन्हें प्रसन्न करें। 3यहाँ तक कि मसीह ने भी स्वयं को प्रसन्न नहीं किया था। बल्कि जैसा कि मसीह के बारे में शास्त्र कहता है, “उनका अपमान जिन्होंने तेरा अपमान किया है, मुझे पर आ पड़ा है।”\* 4हर वह बात जो शास्त्रों में पहले लिखी गयी, हमें शिक्षा देने के लिए थी ताकि जो धीरज और बढ़ावा शास्त्रों से मिलता है, हम उससे आशा प्राप्त करें। 5और समूचे धीरज और बढ़ावे का स्रोत परमेश्वर तुम्हें वरदान दे कि तुम लोग एक दूसरे के साथ यीशु मसीह के उदाहरण पर चलते हुए आपस में मिल जुल कर रहो। 6ताकि तुम सब एक साथ एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पिता, परमेश्वर को महिमा प्रदान करो। 7इसलिए एक दूसरे को अपनाओ जैसे तुम्हें मसीह ने अपनाया। यह परमेश्वर की महिमा के लिए करो। 8मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि यह प्रकट करने को कि परमेश्वर विश्वसनीय है उनके पुरखों को दिये गए परमेश्वर के वचन को दृढ़ करने को मसीह यहूदियों का सेवक बना। 9ताकि गैर यहूदी लोग भी परमेश्वर को उसकी करुणा के लिए महिमा प्रदान करें। शास्त्र कहता है:

“इसलिये मैं गैर यहूदियों के बीच तुझे पहचानूँगा और तेरे नाम की महिमा गाऊँगा।” *भजन संहिता 18:49*

10और यह भी कहा गया है, “हे गैर यहूदियो, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के साथ प्रसन्न रहो।”

*व्यवस्था विवरण 32:43*

11और फिर शास्त्र यह भी कहता है, “हे गैर यहूदी लोगो, तुम प्रभु की स्तुति करो। और सभी जातियो, परमेश्वर की स्तुति करो।” *भजन संहिता 117:1*

12और फिर यशायाह भी कहता है, “यिश्शै का एक वंशज प्रकट होगा जो गैर यहूदियों के शासक के रूप में उभरेगा। गैर यहूदी उस पर अपनी आशा लगाएँगे।”

*यशायाह 11:10*

“उनका ... है” भजन. 69:9

13सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर, तुम्हें सम्पूर्ण आनन्द और शांति से भर दे। जैसा कि उसमें तुम्हारा विश्वास है। ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा से भरपूर हो जाओ।

### पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

14हे मेरे भाइयो, मुझे स्वयं तुम पर भरोसा है कि तुम नेकी से भरे हो और ज्ञान से परिपूर्ण हो। तुम एक दूसरे को शिक्षा दे सकते हो। 15किन्तु तुम्हें फिर से याद दिलाने के लिये मैंने कुछ विषयों के बारे में साफ साफ लिखा है। मैंने परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे मिला है, उसके कारण यह किया है। 16यानी मैं गैर यहूदियों के लिए यीशु मसीह का सेवक बन कर परमेश्वर के सुसमाचार के लिए एक याजक के रूप में काम करूँ ताकि गैर यहूदी परमेश्वर के आगे स्वीकार करने योग्य भेंट बन सकें और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिये पूरी तरह पवित्र बनें।

17सो मसीह यीशु में एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के प्रति अपनी सेवा का मुझे गर्व है। 18क्योंकि मैं बस उन्हीं बातों को कहने का साहस रखता हूँ जिन्हें मसीह ने गैर यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का रास्ता दिखाने का काम मेरे वचनों, मेरे कर्मों, 19आश्चर्य चिह्नों और अद्भुत कामों की शक्ति और परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ्य से, मेरे द्वारा पूरा किया। सो यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम के चारों ओर मसीह के सुसमाचार के उपदेश का काम मैंने पूरा किया। 20मेरे मन में सदा यह अभिलाषा रही है कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ जहाँ कोई मसीह का नाम तक नहीं जानता, ताकि मैं किसी दूसरे व्यक्ति की नींव पर निर्माण न करूँ। 21किन्तु शास्त्र कहता है:

“जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया है, वे उसे देखेंगे। और जिन्होंने सुना तक नहीं है, वे समझेंगे।”

*यशायाह 32:15*

### पौलुस की रोम जाने की योजना

22मेरे ये कर्तव्य मुझे तुम्हारे पास आने से बार बार रोकते रहे हैं। 23किन्तु क्योंकि अब इन प्रदेशों में कोई स्थान नहीं बचा है और बहुत बरसों से मैं तुमसे मिलना चाहता रहा हूँ, 24सो मैं जब स्पेन जाऊँगा तो आशा करता हूँ तुमसे मिलूँगा! मुझे उम्मीद है कि स्पेन जाते हुए तुमसे भेंट होगी। तुम्हारे साथ कुछ दिन ठहरने का आनन्द लेने के बाद मुझे आशा है कि वहाँ की यात्रा के लिए मुझे तुम्हारी मदद मिलेगी। 25किन्तु अब मैं परमेश्वर के पवित्र जनों की सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ। 26क्योंकि मकदूनिया और अखैया के कलीसिया के लोगों ने यरूशलेम में परमेश्वर के पवित्र जनों में जो दरिद्र हैं, उनके लिए कुछ देने का निश्चय किया है। 27हाँ,

उनके प्रति उनका कर्तव्य भी बनता है क्योंकि यदि गैर यहूदियों ने यहूदियों के आध्यात्मिक कार्यों में हिस्सा बँटाया है तो गैर यहूदियों को भी उनके लिये भौतिक सुख जुटाने चाहिये। 28सो अपना यह काम पूरा करके और इकट्ठा किये गये इस धन को सुरक्षा के साथ उनके हाथों सौंप कर मैं तुम्हारे नगर से होता हुआ स्पेन के लिये रवाना होऊँगा 29और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो तुम्हारे लिए मसीह के पूरे आशीर्वादों समेत आऊँगा।

30हे भाइयो, तुमसे मैं प्रभु यीशु मसीह की ओर से आत्मा से जो प्रेम हम पाते हैं, उसकी साक्षी दे कर प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी ओर से परमेश्वर के प्रति सच्ची प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो 31कि मैं यहूदियों में अविश्वासियों से बचा रहूँ और यरूशलेम के प्रति मेरी सेवा को परमेश्वर के पवित्र जन स्वीकार करें। 32ताकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मैं प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पास आकर तुम्हारे साथ आनन्द मना सकूँ। 33सम्पूर्ण शांति का धाम परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे। आमीन।

### रोम के मसीहियों को पौलूस का संदेश

**16** मैं किंखिया की कलीसिया की विशेष सेविका हमारी बहन फीबे की तुम से सिफारिश करता हूँ 2कि तुम उसे प्रभु में ऐसी रीति से ग्रहण करो जैसी रीति परमेश्वर के लोगों के योग्य है। उसे तुमसे जो कुछ अपेक्षित हो सब कुछ से तुम उसकी मदद करना क्योंकि वह मुझ समेत बहुतों की सहायक रही है।

3प्रिस्का और अक्विला को मेरा नमस्कार। वे यीशु मसीह में मेरे सहकर्मी हैं। 4उन्होंने मेरे प्राण बचाने के लिये अपने जीवन को भी दाव पर लगा दिया था। न केवल मैं उनका धन्यवाद करता हूँ बल्कि गैर यहूदियों की सभी कलीसिया भी उनके धन्यवादी हैं। 5उस कलीसिया को भी मेरा नमस्कार जो उनके घर में एकत्र होती है। मेरे प्रिय मित्र इपनिंतुस को मेरा नमस्कार जो एशिया में मसीह को अपनाने वालों में पहला है। 6मरियम को, जिसने तुम्हारे लिये बहुत काम किया है, नमस्कार। 7मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और यूनियास को, जो मेरे साथ कारागार में थे और जो प्रमुख धर्म-प्रचारकों में प्रसिद्ध हैं, और जो मुझ से भी पहले मसीह में थे, मेरा नमस्कार। 8प्रभु में मेरे प्रिय मित्र अम्पलियातुस को नमस्कार। 9मसीह में हमारे सहकर्मी उरबानुस तथा मेरे प्रिय मित्र इस्तुखुस को नमस्कार। 10मसीह में खरे और सच्चे अपिल्लेस को नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार। 11यहूदी साथी हिरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के परिवार के उन लोगों को नमस्कार जो प्रभु में हैं। 12त्रुफेना और त्रुफोसा को जो

प्रभु में परिश्रमी कार्यकर्ता हैं, नमस्कार। मेरी प्रिया परसिस को, जिसने प्रभु में कठिन परिश्रम किया है, मेरा नमस्कार। 13प्रभु के असाधारण सेवक रूफुस को और उसकी माँ को, जो मेरी भी माँ रही है, नमस्कार। 14असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मैस, पत्रुबास, हिर्मैस और उनके साथी बंधुओं को नमस्कार। 15फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस तथा उसकी बहन उलुम्पास और उनके सभी साथी संतों को नमस्कार। 16तुम लोग पवित्र चुंबन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो। तुम्हें सभी मसीही कलीसियों की ओर से नमस्कार।

17हे भाइयो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुमने जो शिक्षा पाई है, उसके विपरीत तुममें जो फूट डालते हैं और दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते हैं, उनसे सावधान रहो, और उनसे दूर रहो। 18क्योंकि ये लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की उपासना करते हैं। और अपनी खुशामद भरी चिकनी चुपड़ी बातों से भोले भाले लोगों के हृदय को छलते हैं। 19तुम्हारी आज्ञाकारिता की चर्चा बाहर हर किसी तक पहुँच चुकी है। इस लिये तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम नेकी के लिये बुद्धिमान बने रहो और बदी के लिये अबोध रहो। 20शांति का स्रोत परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का तुम पर अनुग्रह हो।

21हमारे साथी कार्यकर्ता तीमुथियुस और मेरे यहूदीसाथी लूकियुस, यासोन तथा सोसिपत्रुस की ओर से तुम्हें नमस्कार। 22इस पत्र के लेखक मुझ तिरितियुस का प्रभु में तुम्हें नमस्कार।

23मेरे और समूची कलीसिया के आतिथ्यकर्ता गयुस का तुम्हें नमस्कार। इरास्तुस जो नगर का खजांची है और हमारे बन्धु क्वारतुस का तुम को नमस्कार। 24\*

### परमेश्वर की महिमा

25उसकी महिमा हो जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार – यानी यीशु मसीह के सन्देश के जिस सुसमाचार का मैं उपदेश देता हूँ उसके अनुसार – तुम्हें सुदृढ़ बनाने में समर्थ है। परमेश्वर का यह रहस्यपूर्णसत्य युगयुगान्तर से छिपा हुआ था। 26किन्तु जिसे अनन्त परमेश्वर के आदेश से भविष्यवक्ताओं के लेखों द्वारा अब हमें और गैर यहूदियों को प्रकट करके बता दिया गया है जिससे विश्वास से पैदा होने वाली आज्ञाकारिता पैदा हो। 27यीशु मसीह द्वारा उस एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की अनन्त काल तक महिमा हो। आमीन।

पद 24 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 24 जोड़ा गया है। "हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ रहे। आमीन।"